मैत्री, प्रमोद, करुणा और मध्यस्थता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मैत्री, प्रमोद, करुणा और मध्यस्थता जीवन निर्माण के सूत्र हैं। इससे चरित्र निर्माण होता है। चरित्र मानव का सर्वश्रेष्ठ गुण है। चरित्रवान व्यक्ति सादा जीवन और उच्च विचार का जीवन जीता है। चरित्र की सर्वत्र पूजा होती है। अन्य सभी वस्तुएं आती जाती रहती है। महापुरुषों की पूजा चरित्र के कारण होती है। समाज में महापुरुष एक नया दर्शन देता है। इसलिए वह आदरणीय होता है। मैत्री सभी प्राणियों के साथ होनी चाहिए। भगवान महावीर ने कहा है कि सभी प्राणियों के साथ मैत्री करनी चाहिए। चौरासी लाख जीव योनियों में सभी प्राणी आत्मा के स्तर पर समान है। सबमें एक ही आत्मा है। भेद के कारण शारीरिक भिन्नता दिखाई देती है। राग–द्वेष परस्पर नहीं करना चाहिए। सभी प्राणियों के साथ क्षमाभाव धारण करना चाहिए। किसी को धोखा, तिरष्कार और कष्ट नहीं देना चाहिए। मित्र की पहचान दुःख में होती है। जो सुख–दुःख में समान व्यवहार करता है वही सच्चा मित्र है। मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र उसकी अपनी आत्मा है। अतः आत्मा को ही जानना एवं पहचानना चाहिए।

प्रमोद की भावना प्रसन्नता की भावना है। दूसरों के उत्कर्ष को देखकर प्रसन्नचित्त रहना, दूसरों के अच्छे कार्य में हाथ बंटाना और प्रसन्न रहना प्रमोद भावना है। नकारात्मक विचार से जलन, ईर्श्या नहीं करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति एक लाईन खींच दे तो उसे मिटाकर दूसरी लाईन खींचने के स्थान पर उसके बगल में दूसरी बड़ी लाईन खींचने का प्रयास करना चाहिए। दूसरों को मिटाकर आगे नहीं बढ़ना चाहिए। स्वयं परिश्रम से आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। नकारात्मक विचार मनुष्य को पीछे करता है और सकारात्मक विचार मनुष्य को आगे बढ़ाता है। प्रमोद भावना मंगल भावना है। यह सर्वकल्याण की भावना है। प्रमोद भावना से समाज में सकारात्मकता का विकास होता है।

करुणा की भावना किसी के दुःख से दुःखी होना, किसी के प्रति दया की भावना रखना, तन, मन, धन से किसी की सेवना करना, परोपकार करना करुणा की भावना है। जो दूसरों की आंखों में आंसू नहीं आने देता ईश्वर उसकी आंखों में कभी भी आंसू नहीं आने देता।

मध्यस्थता का अर्थ माध्यस्थ भावना है। यह भावना तटस्थ भावना है। भूखे व्यक्ति को भोजन देना, गरीब व्यक्ति की यथावश्यक सहायता करना, शिक्षा की व्यवस्था करना और दीन दुखियों की आर्थिक सहायता करना दया भाव है। मानव का यह सामाजिक कर्तव्य है कि वह दीन हीनों पर दया भाव रखें। समाज में सम्पन्न और विपन्न दोनों प्रकार के लोग रहते हैं। समाज के लोगों का यह नैतिक उत्तरदायित्व है कि वे विपन्न लोगों के उपर दया भाव से नहीं बल्कि अपना कर्तव्य समझकर उनकी सहायता करें। यह सामाजिक भ्रातृत्व भाव है। पूरे समाज में वसुधैव कुटुम्बकम का भाव रखना चाहिए। जिस व्यक्ति में करूणा की भावना होती है वह व्यक्ति श्रेष्ठ होता है।

दया और करुणा का भाव कई प्रकार से प्रकट होता है। जीवों के प्रति संयम का भाव रखना दया का भाव है। जीव दया का अर्थ है– प्राणियों पर दया दृष्टि रखना। किसी भी प्राणी की हत्या न करना। ब्रह्माण्ड चौरासी लाख योनियों का केन्द्र है। प्राणी यहां जन्म लेता है और कर्मों का भुगतान करने के लिए जीवन–यापन करता है। चौरासी लाख जीव योनियों में केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सबसे अधिक विकसित है। अन्य प्राणी न चिंतन कर सकते हैं न मनन। भारतीय संस्कृति को चार भागों में बांटा गया है– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। मनुष्य धर्म कर्म के द्वारा मोक्ष प्राप्त करता है। यदि प्राणी बुरा कर्म करे तो नर्क में जा सकता है। प्रकृति सबका भरण पोषण करती है। जिस माता–पिता ने अपने को जन्म दिया है उस बच्चे का भरण पोषण करना उसका कार्य है। मनुष्य यदि अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करता है, जीव हत्या करता है तो उसका कर्म निन्दनीय होता है।

सभी व्यक्ति सुखी रहना चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। किन्तु कर्मों के कारण प्राणियों को सुख–दुःख प्राप्त होता रहता है। यदि पूर्वजन्म के कर्म बुरे हैं तो दुःख प्राप्त होता है। इसलिए ऐसा कोई कर्म नहीं करना चाहिए। जिससे दुःख की प्राप्ति हो। कर्म बीज की तरह है। जैसे जिस बीज को बोया जायेगा, वह फल वैसा ही देगा। यदि बबूल का बीज बोया गया है तो निश्चित ही कांटे निकलेंगे और यदि आम का बीज बोया गया है तो आम का फल प्राप्त होगा। इसलिए मनुष्य को अच्छा कर्म ही करना चाहिए। मनुष्य को जीव दया करनी चाहिए। मैत्री, करुणा, सद्भावना, सुचिता और प्रमोद भावना रखनी चाहिए। जगत् के किसी भी प्राणी

को दुःख नहीं देना चाहिए। यह भावना रखनी चाहिए कि सभी प्राणी मेरे समान है। इसीलिए भारतीय शास्त्रों में कहा गया है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।

अर्थात् सभी सुखी होवें, सभी निरोग होवें, सभी कल्याण का दर्शन करें और किसी को भी दुःख न हो। इस उदात्त भावना के द्वारा जीव दया को बढ़ावा दिया गया है। भारतीय संस्कृति में ऐसे मूल्यों को महत्व दिया गया है कि समाज में सभी प्राणी सुखपूर्वक रह सकें।